Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

सुभाष चन्द्र कुशवाहा के कथा साहित्य में स्त्री अनुशीलन

रेशमा त्रिपाठी

शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्व विद्यायल, रीवा, मध्य–प्रदेश।

सारांश– कुशवाहा जी ने अपनी कहानियों में स्त्रियों को व्यक्तिगत स्तर पर, जातिगत स्तर पर स्वतंत्र नहीं माना है और यहीं प्रयास भी किया है कि स्त्रियों को व्यक्तिगत स्तर पर अब स्वतंत्र किया जाय।

मुख्य शब्द– सुभाषचन्द्र कुशवाहा, कथा, साहित्य, स्त्री, मूल्यबोध, विकास।

सामाजिक जीवन में स्त्री–पुरुष अलग–अलग हैं इनकी परंपराएं, मूल्यबोध संवेदनाएं और जीवन यथार्थ की लड़ाइयों के क्षेत्र भी अलग–अलग हूँ ऐतिहासिक विकास के क्रम में स्त्री की स्वतंत्र पहचान लोप हो गई हैं और पहचान के नाम पर सिर्फ शरीर भर रह गया जो उसका नहीं अपितु पुरुष का हैं जीवन को संचालित करने वाले संस्थान, कला रूप विधान, नियम मूल्य और पैमाने सबके सब पुरुष केंद्रित हो गए। स्त्री हाशिए पर थी या निष्क्रिय थी यह कहना मुश्किल हैं क्योंकि जीवन जगत का पर्याय पुरुष था, स्त्री को तो प्रकृति का पर्याय बना दिया गया पुरुष सन्दर्भ में स्त्री का शोषण जब भी जिस रूप में हुआ स्त्री मातहत ही हुई इसी सन्दर्भ में कथाकार ने' रमा चंचल हो गई हैं में लिखते हैं कि" पैतीस साल के मुनेसर यादव को गांव वाले परधान कहते हैं परधान नहीं, परधान जी वैसे मुनेसर प्रधान नहीं हैं उनकी मेहरारु– हैं, परधानी सीट पिछड़े वर्ग की महिला के लिए आरक्षित हुई तो अपनी हाई स्कूल पास मेहरा–रमा यादव को प्रधान पद पर लड़ा दिया मुनेसर यादव ने रमा को पहली महिला प्रधान बनने का गौरव मिला और गांव वालों को परधानिन कहने का पर मूनेसर से लगता हैं कि–"औरत और हाथी पर अंकुश रखना जरूरी होता हैं।'' पर रमा को यह सब नहीं भाता, वह रजिस्टर खोल कर मरद से सवाल करती हैं कि किसका–किसका नाम लिखें हैं? ई मेहरारु तो कभी घर से बाहर नहीं निकलती? फिर मजूरी कैसे करती होगी? मुनेसर अपनी समझदारी की धौस देकर गांव से निकल जाता हैं रमा झुंझलाकर रह जाती हैं 'यकीनन यही कारण हैं कि स्त्री स्वतंत्र छवि कभी उभरकर बाहर नहीं आ पाती हैं 'स्त्री अनुशीलन' का विषय बहुत ही गंभीर विषय हैं उस पर हमला करके चुप कराना सम्भव नहीं और न ही उपहास या उसकी सामाजिक भूमिका और स्वयं की जरूरतों से आंखें चुराई जा सकती हैं स्त्री अनुशीलन तो वर्तमान समाज के समूचे स्त्री समुदाय का अनुशीलन हैं इसी सन्दर्भ में' प्रजा रानी बनाम कउवांहकनी' कहानी में कुशवाहा जी लिखते हैं कि–'एक दिन राजा की तीनों रानियां राजघाट से स्नान कर लौट रही थी रास्ते में लगभग चार बरस का लड़का कहता

है–'माटी का घोड़ा ,माटी की लगाम, घोड़ा पानी पी गुड़–गुड़–गुड़...यह सुनकर चंचला रानी को हंसी आ गई थी पर रति रानी मारे गुस्से के बोल उठी 'अरे चांडालों! कहीं माटी का घोड़ा भी पानी पी सकता हैं? तभी लड़के ने तपाक से जवाब दिया 'जिस राज में औरत ईट–पत्थर जनम सकती हैं उस राज में माटी का घोड़ा पानी भी पी सकता हैं।'.. ईट –पत्थर सुनकर रानियां सोच में डूब गई इसका कारण भी था कि रानियों ने पहली रानी (यानि उसी लड़के की मां) जब गर्भ से थी तो नवजात शिशु के जन्म पर अफवाह उड़ा दी और राजा से जाकर बोली पहली रानी ने ईट–पत्थर को जनमा हैं और राजा ने पहली रानी को जंगल में अलग–अलग बनाकर छोड़ आने का आदेश दे दिया नौकरों से यकीन नहीं होता कि राजा ऐसा भी होता हैं इससे तो स्पष्ट रूप से पता चलता हैं कि पुरुष का संघर्ष सदा स्वार्थी संघर्ष और प्रगतिशील रहा हैं जबकि स्त्री कभी भी स्वार्थी संघर्ष में हिस्सा नहीं लेती यही कारण है कि वर्तमान में राष्ट्रीय मानवाधिकार के तहत संपत्ति का अधिकार में पुत्रियों की हिस्सेदारी जो कागजी दस्तावेजों तक ही सीमित रहा हैं उसे संज्ञान में लेते हुए उच्च न्यायालय प्रयागराज ने पुत्रवधु को परिवार की श्रेणी में रखने का आदेश दिया और कहा बेटी से ज्यादा बहु का अधिकार होना चाहिए। इसका मुख्य कारण' 'स्त्री उपेक्षा' ही तो हैं यदि नहीं तो क्यों? विधवा–सधवा पर कोर्ट ऐसा क्यों निर्णय लेती निश्चित ही स्त्री अस्तित्व को बेटी से ज्यादा बहू रूप में सहज रूप समाज – परिवार स्वीकार्य नहीं करता हैं। गौरतलब कि जागरूक स्त्रियां यह समझ चुकी है तभी तो निरन्तर –दृढ़ संकल्प के साथ धैर्य पूर्वक वह आगे बढ़ने लगी है अंतर्विरोधों को मौलिक ढ़ंग से हल करने की उसकी विशिष्ट क्षमता ने उन्हें विपरीत परिस्थितियों में जीना ,स्वयं को बचाए रखना और निरन्तर आगे बढ़ते जाना कि दिशा में ठेला हैं स्त्री अनुशीलन का अध्ययन कर कुशवाहा जी ने चुप्पी और सहिष्णुता का भाव आर–पार जाकर झांकने की जरूरत को समझा हैं और साथ ही अंतरालों व द्वंदों पर भी नजर रखा तभी तो 'रमा चंचल हो गई है' कहानी में लिखते है कि–'पता हैं पता है तू पढ़ी लिखी हैं। अच्छे खानदान की हैं पर पूरे बीस जगह दस्तखत करने हैं समय लगेगा! समझी! अगूँठे के निशान पर कोई शक नहीं करता ... इधर दो अपना बायां अगूंठा। मैं फटाफट लगवा देता हूँ परधान मंजू का अगूंठा पकड़ कर पहले इंक पैड पर दबाते हैं, फिर रजिस्टर पर। उधर रामचरन –बो को पसीना आ रहा हैं। नई –नवेली बहू और नाजुक हाथ वह भी गैर मरद के हाथ में। यहां पर कुशवाहा जी ने प्रशासन की व्यवस्था के साथ –साथ स्त्री के मनोभावों और उनके भीतर उठ–रहें द्वंद्व को इस तरह उभारने का प्रयास किया है यकीनन यह गलत भी नहीं होगा कि लेखक ग्रामांचल के स्त्री मनोभावों के पारखी भी है समाज मानव सभ्यता को तो स्वीकारता है किन्तु मानवी सभ्यता को उपेक्षित छोड़ दिया है जहां स्त्रियां सांस तो लेती हैं कितुं गले में फांस लेकर इसी सन्दर्भ में लेखक ने 'असली अपराधी' कहानी में सत्ता के आइस –पाइस के खेल में स्त्रियों के न्याय को लेकर किस तरह गंदी राजनीति का शिकार होती हैं स्त्रियाँ। कुशवाहा जी कहानी में लिखते है

कि–'अमेरी कस्बे की दलित लड़की लवंगियां के साथ बलात्कार की यह घटना ऐसे समय में प्रकाश में आई थी जब सरकार गिराने में और विपक्ष सत्ता पक्ष किसी भी तरह सरकार बचाने में मसगूल थी यानी कि राजधानी का मिजाज गर्म था धनबल और बाहुबल का अनैतिक प्रयोग जायज था, आरोप –प्रत्यारोप से आम जनता को गुमराह करने स्वयं को बहुमत में होने तथा दूसरे पर अनैतिक हथकंडे अपनाने का आरोप उफान पर था।' गंगाराम इसमें आबकारी विभाग चाहते थे जिसका फायदा उठाकर विपक्ष ने चुनावी मुद्दा बना दिया और राजनीतिक मुद्दा बना कर इतना उछाला कि –'मुख्यमंत्री ने आनन–फानन में घोषणा तक कर दी–बलात्कारी को हर हालत में सलाखों के अंदर डाला जाएगा' फिर क्या था ?समाचार पत्र, वक्तव्य, आईजी, डी आई जी की तत्परता ,पुलिसिया आक्रोश तब निर्दोष पर फूट पड़ा। मीडिया ने चिल्लाया पर कुछ हुआ नहीं इसलिए कि बलात्कार करने वाला विधायक का बेटा था और लवंगिया अपनी झोपड़ी के बाहर गुमसुम बैठी हुई, नीले आसमान में अपने भविष्य की धुंधली तस्वीर निहार रही थी। यह लवांगिया की दशा नहीं अपितु कुशवाहा जी ने प्रत्येक शोषित स्त्रियों की दशा पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त है पता नहीं कितनी लवंगिया हर रोज अपनी धुंधली तस्वीर खोज रही हैं पर समाज का एक वर्ग आज भी इन मुद्दों पर खामोशी लिए बैठा है देश को अंग्रेजो से आजादी सन् 1947 में तो मिल गई पर क्या? स्त्रियों को पुरुषों की नगण्य मानसिक बीमारी से आजादी मिली। क्या समाज का प्रत्येक व्यक्ति उनके प्रेम सम्बन्धों को सहज रूप में स्वीकार करता हैं इसी सन्दर्भ में पुरुष की मानसिकता को उजागर करते हुए कुशवाहा जी अपनी कहानी' प्यार दुकान और मचान' में लिखते है कि–'जिलाधिकारी महोदय! मै भारी मन से पापा को अकेला छोड़कर जा रही हूँ। पता नहीं वें कैसे खाएंगे–पिएंगे, कैसे इस कालोनी के लोगों के बीच अपनी जिंदगी गुजारेंगे मम्मी के गुजरने के बाद वे वैसे भी टूट चुके है परन्तु मेरे पास उन्हें अकेला छोड़कर जाने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है मैं अब भी यह समझ नहीं पा रही हूँ कि मेरा गुनाह क्या है? मेरा आचरण कैसे तिवारीपुर के लिए कलंक की बात बन गया? दर असल कलंक की बात तो शम्भु और उनके साथियों के पिछले आचरण का होना चाहिए, परंतु तब कोई बवाल नहीं मचा था तब धर्म के ठेकेदारों की आंखों में शर्म नहीं दिखी थी आज लोग मेरे और इब्राहिम के प्यार पर हाय–तौबा मचा रहे है आज इनकी नैतिकता जाग गई हैं मेरे भविष्य का निर्धारण करने लगे हैं ये लोग ,जैसे कि मैं इनके हाथ की कठपुतली हूँ, महोदय, मैं इब्राहिम के साथ तिवारीपुर से दूर जा रही हूँ मेरे पापा और इब्राहिम के परिवार को परेशान न किया जाय। मैंने इस पत्र की एक प्रति सक्सेना अंकल को सौप दी हैं ...सुरेखा।''

इस पत्र को पढ़कर यह समझना मुश्किल नहीं कि अंतर्जातीय प्रेम विवाह स्त्रियों को किस कटघरे में लाकर खड़ा कर देती हैं 'स्वतंत्रता का मतलब तो स्त्री और पुरूष दोनों में समान रूप से स्वीकार्य हैं तब भी स्त्रियों के प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह पर पुरजोर विरोध क्यों? वहीं दूसरी ओर शहरी

निम्नवर्ग और निम्न मध्यवर्ग की काम काजी स्त्रियों का स्वयं अपनी कमाई पर अधिकार नहीं है उसे खर्च करने का निर्णय उनके हाथ में नहीं है अधिकतर उनकी कमाई पिता, पति या परिवार के पुरुष सदस्य हथिया लेते हैं इस तरह घर और बाहर के दोहरे काम का बोध उठाते हुए वे दोहरे शोषण की शिकार होती हैं''(हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली पृष्ठ 387,स्त्री– विमर्श) इसी सन्दर्भ में कुशवाहा जी अपनी कहानी' रात के अंधियारें में', लिखते हैं कि–समाज की नजरों में सुंदर, मजबूत और आत्मबली फातिमा की जिंदगी के तमाम बजबजाते पक्ष है,जिनकी सफाई कर पाना उनके वश में नहीं । वैसे भी जिस जवान बेटी की मां वृद्ध हो, पिता की असमय मृत्यु हो चुकी हो आज के गंधाते गांव में उसके लिए खुली हवा में रह पाना सम्भव कहां? तभी तो बड़का बाबू यानी कि महेश तिवारी के सुपुत्र छोटका बाबू मतलब की रमन तिवारी रात के अंधेरे में गांव के बीच स्थित खलिहान किनारे बूढ़े बरगद के पीछे जब घेर कर कहते है–'तुम्हें तो महारानी होना चाहिए फातिमा' तो वह बड़ी आसानी से तिवारी के मन में उपजी हैवानियत के लिजलिजेपन को ताड़ लेती हैं' वह सब कुछ समझती थी फिर भी खामोश रहती क्योंकि वह मजदूरी कर अपना और अपनी मां का पेट भरना जानती थी। किन्तु सवाल यह उठता है कि क्या समाज ऐसी असहाय स्त्रियों की अस्मिता को बचाएं,बनाए रखने में मदद करता हैं? यकीनन नहीं फिर स्त्रियां ही क्यों कटघरे में खड़ी मिलती हैं। वर्तमान में स्त्रियों को अपनी तस्वीर बदलनी तो हैं लेकिन अब भी बहुत सी स्त्रियां धुंधलके में हैं। अक्सर देखने को मिलता कि स्त्रियों को स्त्री होने की कीमत बाहर और भीतर चुकानी पड़ती हैं इसमें अपवाद स्वरूप लोग उलाहना भी देते हैं किन्तु समाज को समझना चाहिए कि प्रकृति का नियम तो नहीं बदला जा सकता लेकिन स्त्रियों की अस्मिता, शिक्षा, परम्परा और पुरूष पराधीनता में सुधार जरूर किया जा सकता है। क्योंकि वर्तमान स्थिति भी महिलाओं यह है कि विश्व कि पूरी जमीन का केवल एक प्रतिशत भाग ही नाम है जबकि वें आधी आबादी है, विश्व के काम का साठ प्रतिशत महिलाएं ही करती हैं मगर आमदनी का केवल दस प्रतिशत हिस्सा ही उनकी निजी आमदनी मानी जाती हैं निरक्षर जनता का तीन चौथाई भाग महिलाओं का हैं भारत में लगभग पांच हजार महिलाएं प्रति वर्ष दहेज के लिए मार दी जाती है और एशिया साहित्य की दृष्टि से लगभग एक लाख महिलाएं प्रतिवर्ष वेश्यावृति में धकेल दी जाती हैं इसी सन्दर्भ में कुशवाहा जी अपनी कहानी–'तमाशा जारी है' में लिखते हैं कि–अंधविश्वास द्वारा किस तरह एक स्त्री की अस्मिता के साथ छल किया जाता हैं जमीदारों, रईसो द्वारा और वाद में उसे गांव से बाहर निकाल दिया जाता हैं इसका चित्रण बखूबी किया हुआ है साथ ही 'देवी' स्वरूप में उन्हें क्यों स्वीकार किया जाता हैं इस मिथक तथ्यों को भी उजागर करने का प्रयास किया है इस पर भगत उपाध्याय जी की टिप्पणी याद आती हैं कि–सात–आठ वर्ष की अवस्था से ही स्त्रियां भात पकाना शुरू कर देती हैं किन्तु भात कब पक गया, इसका वे ठीक निर्णय तब तक नहीं कर सकती जब तक दो–एक चावल हाथ से उठाकर वे अपनी दो

उंगलियों से देख नहीं लेती तब तक उनकी प्रज्ञा दो अंगुली–मात्र परिमित कही गई हैं।' (हिंदी साहित्य का आधा इतिहास पृष्ठ 100) गौरतलब है कि कुशवाहा जी की कहानियों की स्त्रियां आधुनिक तो हैं किन्तु उनकी प्रज्ञा भी दो अंगुलि मात्र ही परिमित की गई हैं जो कि विचारणीय है। समाज में स्त्रियों के मनोविज्ञान का जैसा परिचय मिलता हैं वैसे ही पर्वत की विषय भूमि भी है। एक पुरुष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने पर उतारू हो जाता हैं और एक स्त्री के क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियां उसके अकारण दंड को अधिक भारी बनाए बिना नहीं रहती। इस तरह पग–पग पर पुरुष से सहायता की याचना ना करने वाली स्त्री की स्थिति कुछ विचित्र सी हैं वह जितनी ही पहुंच से बाहर होती हैं पुरुष उतना ही झुंझलाता हैं और प्रायः वह झुंझलाहट मिथ्या अभियोगों के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं यह स्वाभाविक भी है क्योंकि वह अप्राप्य हैं उसी को प्राप्त प्रामाणिक करके हमें संतोष होता हैं ,जो प्राप्त हैं उसे प्राप्त और प्रामाणिक करने की आवश्कता ही नहीं रहती। किन्तु खड़ा हुआ व्यक्ति यदि अपने गिरने कि घोषणा सुनते–सुनते खड़े होने के प्रयास को व्यर्थ समझने लगे तो आश्चर्य क्या? इसी कारण अब तक स्त्री स्वभाव से इतनी शक्ति शालिनी नहीं होती कि मिथ्या पराभव की घोषणा से विचलित न हो तब तक उसकी स्थित अनिश्चित ही रहती हैं। (स्त्री कथा –सुधा सिंह पृष्ठ 153) यही पराभाव कुशवाहा जी की कहानियों के स्त्री पात्र में भी देखने को मिलता हैं इतिहास पर नजर डालें तो एंगेल्स ने तो यह भी लिखा है कि–"इतिहास का पहला वर्ग विरोध, एक निष्ठ विवाह के अन्तर्गत पुरुष और नारी के विरोध के साथ–साथ इतिहास में पहला वर्ग–उत्पीड़न पुरुषों द्वारा नारी के उत्पीड़न के साथ प्रकट होता हैं। ''मार्क्सवादियों के दृष्टिकोण से लिंगीय शोषण भी वर्गीय शोषण हैं, लिंगीय वैषम्य और असमानता से मुक्ति तभी सम्भव है जब लिंगीय एकवर्गीय अंतर्विरोधों का समाधान कर लिया जाय । एंगेल्स की राय थी कि–"स्त्रियों की मुक्ति की पहली शर्त यह है कि पूरी जाति फिर से सार्वजनिक उत्पादन में प्रवेश करें और इसके लिए आवश्यक हैं कि समाज की आर्थिक इकाई होने का वैयक्तिक गुण नष्ट कर दिया जाय साथ ही स्त्री और पुरूष कानून कि नजर में बिल्कुल समान मान लिए जाए।'' आगे कहते हैं कि–'आधुनिक वैयक्तिक परिवार नारी की खुली या छिपी हुई घरेलू दासता पर आधारित है।'' (स्त्री वादी साहित्य विमर्श–पृष्ठ 207) गांवों से लेकर महानगरों के मध्य 'स्त्री–श्रम'' व्यापार के क्षेत्र में इस्तेमाल किया जाता हैं वह व्यापार मशीनी उद्योग धंधों में अधिकांश प्रयोग किया जाता हैं वहीं ग्रामीण, दलित, शोषक वर्ग में शारीरिक, मानसिक और आर्थिक तीनों रूपों में व्यापार किया जाता हैं इसी सन्दर्भ में कुशवाहा जी अपनी कहानी में' बात थी उड़ती जा रही' में लिखते हैं कि–"दूधनाथ की बीवी के मुख से बाबू साहब का गुणगान सुन रामदेव वाल्मीकि की पतोहू सतर्क रहने लगी, दूधनाथ–बो कम छिनार नहीं है। का पता किसी दिन बंगला में साया उठाकर खड़ी हो गई हो? बाबू साहब ने हमको एक टुकड़ा जमीन नहीं दिया ? काहें उसी

पर मेहरबान हुए जा रहे है? सोचने लगी थी रामदेव वाल्मीकि की पतोहू । राम चरन ने भी इस घटना पर किस्से गढ़ लिए थे जो खेती–बारी में युवकों को सुना–सुना कर मनोरंजन करता रहता।'' और अंत में पुरुष मानसिकता को उजागर करते हुए कुशवाहा जी अपनी बात इस तरह कहते कि–'जो तीर लक्ष्य न भेद सकें,उसे चलाने का मतलब अपना नुकसान।' वहीं पुरुष हुकूमत के विषय में' रात के अंधियारे में' कहानी में लिखते है कि–"गांव का रिमोट कंट्रोल तो बड़का बाबू के पास था, वैसे भी परधान कोई भी हो, गांव में ऊंची जाति वालों की ही चलती हैं। नीच जाति वाले बिना हुकुम पाए काम करते हैं भला? गांव के गरीबों की बहू – बेटियां तो बबुआन की रखैल होती हैं।'' इस बात को कथाकार ने कहानी के अंत में स्पष्ट किया–' तब तक पंचायत को यह भी फैसला करना होगा कि इस गांव में कौन –कौन इश्क फरमाते रहे है फातिमा अपने असल बाप की पहचान कराएगी जांच की मांग करेंगी। डीएनए टेस्ट से अब सब कुछ पता चल जाता है। डीएनए टेस्ट से पता चल जाएगा कि फातिमा उस्मान की औलाद थी कि में....सुधाकर मे बोलते –बोलते बात गटक ली थी।'' यकीनन सुधाकर ने बाबू साहब के मन मस्तिष्क के अत्यंत संवेदनशील तंतु को हिला दिया था उस राज की कलाई उतार दी थी जो अब तक सात पर्दों में थी वह जितनी तेजी से आया था उतनी तेजी से चला भी गया। आज भी समाज के ग्रामीण ,दलित, शोषित वर्ग के बीच स्त्रियों के आंचल में बड़े–बड़े राज दफन हैं यदि डीएनए टेस्ट कराया जाय तो पचास फीसदी दलित सवर्णों की श्रेणी में आ जाएंगे। इतिहास गवाह है स्त्री देह पर संकट अंग्रेजो से ही नहीं था अपितु मध्ययुगीन समाज में भी देखने को मिलता हैं उदाहरण के रूप में–'लाची पूर्वांचल की एक ऐसी ही नायिका हैं। श्री रामनरेश त्रिपाठी ने लाची से सम्बन्धित दो कथात्मक गीतों का संकलन किया है लाची बारह वर्ष की सुंदरी थी और खिड़की पर बैठी हवा खा रही थी कि घोड़े पर बैठे राजपूत की नजर उस पर पड़ी। राजा कुटिया के पास पहुंचा और उसे मुहरे दी कि वह किसी तरह लाची को बहलाकर ला सके। कुटनी कहती हैं लाची स्वामी की गोद में सोती हैं ,उसे किस प्रकार लाया जा सकता है? राजा ने कहा–' हाथ में उपलें लो और आग लाने के बहाने लाची को ले आओं।'' इसी तरह भारतीय इतिहास का आदिकाल और मध्यकाल स्त्री शोषण के साथ भरा पड़ा है जिस पर जितना भी प्रकाश डालों वह उतना ही अधूरा सा प्रतीत होता हैं। हालांकि उद्योग जगत और टेलीविजन की कुछ स्त्रियां अलग– अलग क्षेत्रों में भारतीय परम्पराओं, लोकोक्तियों और मिथकों को तोड़ने का सिलसिला आरम्भ कर दिया है जिसमें अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा अपने से, 10वर्षीय छोटे पुरुष से विवाह कर' कन्या से वर दून' जैसी लोकोक्ति पर प्रहार करती हैं, वहीं हाल ही में अभिनेत्री कैटरीना कैफ ने विक्की कौशल से विवाह कर ' राजा के घर पैदा होने से नहीं, राजा के घर ब्याह करने से लड़कियां रानी होती हैं' जैसे सामाजिक कुप्रथाओं की उक्तियों पर प्रहार करती हैं। वहीं अवनी मेखला, पीबी सिंधु, मिताली राज अलग–अलग क्षेत्रों में अपना लोहा मनवा चुकी हैं जातिगत भेदभाव भी दस फीसदी तक कम हो गया

है किन्तु कुशवाहा जी की कहानियों के अनुसार आज भी भारत की नब्बे फीसदी दलित स्त्रियां रईसों के रात की चादर की सिलवट होती है और दिन में अछूत की शिकायत। वर्तमान समाज इन्हीं जातिगत समीकरण की गंदगी में लिप्त है। कुशवाहा जी ने अपनी कहानियों में स्त्रियों के इन्हीं समस्याओं को उजागर करने का प्रयास कर कई सवाल मन में उजागर किया जैसे कि–अगर विवाह के विज्ञापन में दूल्हे से गृहकार्य की शिक्षा के बारे में पूछा जाय तो कैसा रहेगा?, महिलाओं का सम्मान कोई चीज है क्या?, उस शिक्षा का क्या काम जो उत्साह को सही करने की निडरता को आपके अन्तस्थ में न बिठाए ? इत्यादि अनेक कहानियों में कुशवाहा जी ने दलित स्त्री समस्या, स्त्री अनुशीलन को बताने का प्रयास किया है क्योंकि इनकी कहानियों उत्तर–प्रदेश जोगिया पट्टी कुशीनगर के दलित स्त्रियों की कहानियां मात्र नहीं हैं अपितु समूचे भारत की दलित, शोषित, पीड़ित स्त्रियों के मनोभावों की मनोदशा और अनुभूति और पीड़ा को समझने का और जागरूक करने अथक प्रयास किया है। परिवर्तन जैसे प्रकृति का शाश्वत नियम उसी क्रम में समाज में निरन्तर बदलाव हो रहें किन्तु स्त्री पक्ष आज भी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों में सिमटा हुआ सा प्रतीत होता हैं–

"अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में हैं दूध और आंखों में हैं पानी"।।

यह कहना गलत नहीं होगा कि कुशवाहा जी ने अपनी कहानियों में स्त्रियों को व्यक्तिगत स्तर पर जातिगत स्तर पर स्वतंत्र नहीं माना है और यह यहीं प्रयास भी किया है कि स्त्रियों को व्यक्तिगत स्तर पर अब स्वतंत्र किया जाय।

सन्दर्भ सूची–

1. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास–सुमन राजे
2. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श–जगदीश चतुर्वेदी
3. स्त्री कथा–सुधा सिंह
4. लाला हरपाल के जूते व अन्य कहानियां सुभाष चन्द्र कुशवाहा
5. बूचड़खाना कहानी संग्रह– सुभाष चन्द्र कुशवाहा
6. होशियारी खटक रही है कहानी संग्रह– सुभाष चन्द्र कुशवाहा
7. हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली–डॉ अमरनाथ